Santan Prapti Mantra Sadhana

संतान प्राप्ति हेतु मंत्रौषधि

Gurudev Raj Verma

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

अपनी सामर्थ्यानुसार दान, व्रत, जप और धर्माचरण के द्वारा मनुष्य अपने भाग्य के लेख को भी बदल सकता है। रामचरितमानस में लिखा है- मंत्र महामणि विषय ब्यालके। मेटत कठिन कुअंक भालके। अर्थात् मंत्र जप से मस्तक में लिखे कुअंक भी मिट जाते हैं। परंतु यह कोई साधारण कार्य नहीं है। इसके लिये कठिन तपश्चर्या, अडिग आस्था, अटल इच्छाशक्ति, गुरु और देवता के प्रति पूर्ण श्रद्धा भक्ति के साथ समर्पणभाव अत्यन्त आवश्यक होता है। इसके अतिरिक्त कुछ गम्भीर समस्याओं में गुरु के अनुभव, उनकी प्रसन्नता, उनकी आध्यात्मिक ऊर्जा एवं दिशानिर्देश का भी विशेष महत्त्व होता है। इन दोनों में से एक निर्बल हो जाये तो बात नहीं बनती है। अर्थात् गुरु तो शिष्य के प्रारब्ध का लेख काटने हेतु उसे साधनारूपी भट्टी में तपाकर पवित्र करने को तैयार है, परंतु शिष्य इसके लिये तैयार नहीं है। उसे तो कोई रत्न या लघु टोने-टोटके बताने वाला ही गुरु चाहिये तथा कई बार शिष्य अटल साधना करने हेतु तैयार होता है, परंतु उसके पास इस प्रकार के गम्भीर दिशानिर्देश देने वाला गुरु नहीं होता है।

जो स्त्री पुरुष संतानसुख से वंचित हो, उन्हें देवलोक से अधिकारपूर्वक सहायता मांगनी चाहिये। इस सहायता में भी यदि

एक सद्गुरु की सहायता मिल जाये तो आपका वर्षों का कार्य महीनों में पूर्ण हो जायेगा, क्योंकि एक वास्तविक गुरु ईश्वर एवं प्रकृति के स्वभाव को साधारण मनुष्य से कही अधिक जानता और समझता है। हमारे प्राचीन शास्त्रों में संतान प्राप्ति हेतु कई प्रकार के विधि विधान उपस्थित हैं। जैसे- पुत्रेष्टि यज्ञ, हरिवंशपुराणपाठ, रामायणपाठ, विष्णुपराणपाठ, संतानगोपालमंत्र, षष्ठीदेवीमंत्र, शिवाभिलाष्टक स्तोत्र, महामृत्युंजयमंत्र, सम्पुटित सहस्त्रचण्डीपाठ, विष्णुसहस्त्रनाम, बटुकभैरव एवं संतान गणपति आदि के विशिष्ट अनुष्ठानों द्वारा मनुष्य तेजस्वी संतान को प्राप्त कर सकता है। इसके अतिरिक्त साप्ताहिक अथवा मासिक उपवास एवं दान आदि के द्वारा मनुष्य अपने मनोरथ की पूर्ति कर सकता है। राजा दशरथ ने भी पुत्रेष्टि यज्ञ के द्वारा संतान सुख प्राप्त किया था। इनमें जिस देवता के प्रति श्रद्धा, प्रेम और समर्पणभाव हो मनुष्य उन्हीं के द्वार पर बैठ जाये और तब तक न उठे जब तक कार्यपूर्ण न हो।

1- संतान गणपति स्तोत्रम्- नमोऽस्तु गणनाथाय सिद्धि बुद्धि युताय च। सर्वप्रदाय देवाय पुत्रवृद्धिप्रदाय च।।

गुरूदराय गुरुवे गोप्त्रे गुह्या सिताय ते। गोप्याय गोपिता शेषभुवनाय चिदात्मने।।

विश्वमूलाय भव्याय विश्व सृष्टि कराय ते। नमो नमस्ते सत्याय सत्य पूर्णाय शुण्डिने।।

एकदन्ताय शुद्धाय सुमुखाय नमो नमः। प्रपन्न जनपालाय प्रणतार्तिविनाशिने।।

शरणं भव देवेश संतति सुदृढां कुरू। भविष्यन्ति च ये पुत्रा मत्कुले गणनायकः।।

ते सर्वे तव पुजार्थं निरताः स्युर्वरो मतः। पुत्रप्रदमिदं स्तोत्रं सर्वसिद्धि प्रदायकम्।।

गणपति स्तोत्र द्वारा भक्तिपाठ करने से मनुष्य प्रखर बुद्धिवान एवं तेजस्वी संतान प्राप्त करता है। नित्य दो–चार पाठ से कोई प्रभाव नहीं होगा। कठोर साधना से ही देवलोक से विशिष्ट वस्तु प्राप्त होती है। सर्वप्रथम शास्त्रसंगत 1100 पाठ कर इस स्तोत्र को सिद्ध कर लेना चाहिये। इसके बाद नित्य 21 या 31 पाठ नित्य करते रहना चाहिये, जब तक देवता कार्य पूर्ण न करें। इस स्तोत्रसाधना में गणपति भगवान् स्वप्न में कुछ न कुछ दिशा निर्देश अवश्य प्रदान करेंगे। साधनापथ पर मनुष्य का लक्ष्य अपनी कामनापूर्ति का कदापि नहीं होना चाहिये। मनुष्य का लक्ष्य केवल और केवल अपने देवता को प्रसन्न करने का

ही होना चाहिये। अपनी सारी कामनाएं भूलकर केवल अपनी सेवाभक्ति से इष्टदेवता को प्रसन्न करना है, बस। इस भावना के साथ जब आप साधना करेंगे तो आपके इष्टदेवता शीघ्र ही प्रसन्न हो जायेंगे और जब देवता किसी मनुष्य पर प्रसन्न हो जाये तो उसके सर्वकार्य स्वयं ही सिद्ध हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त जन्मकुण्डली में संतानदोष से सम्बन्धित ग्रहों का भी उपाय करना चाहिये। पितर कुपित होने पर भी वंशवृद्धि नहीं होती है। इस विषय का भी ध्यान रखना आवश्यक है। अतः प्रत्येक अमावस्या को उत्तम खाद्य सामग्री को दो भागों में लेकर किसी सामान्य मन्दिर में जाये जहां का पुजारी ज्यादा धनवान न हो और वृद्ध हो तो ज्यादा अच्छा है। वहां जाकर एक भाग पितरों का नाम, कुल, गोत्र एवं ध्यान लेते हुए उनको समर्पित करे और दूसरा भाग अपने इष्टदेवता को समर्पित करे। इससे पितरदेवता एवं इष्टदेवता की कृपा से आपके सर्व आवश्यक कार्य सिद्ध हो जायेंगे। पितरदोष न होने पर भी इस भेंट से पितरों के आशीर्वाद से शीघ्र वंशवृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त नित्य एक पाठ पितरसूक्त का भी कर लेना चाहिये।

पति-पत्नी दोनों स्तोत्र का पाठ करेंगे तो कम समय में ज्यादा पाठ होंगे। स्तोत्रारम्भ करने से पूर्व और अंत में गणेश गायत्री

की एक माला करने से, प्रत्येक माह की दोनों चतुर्थी तिथियों में गणपति का व्रत एवं दान करने से तथा सप्ताह में जिस दिन आपका अवकाश हो उस दिन गणपति गायत्री से होम करने या करवाने से अत्यन्त शीघ्र कार्य होता है। अन्य भी कई शास्त्रीयकर्म हैं, जिनका कार्य एवं परिस्थितिनुसार आयोजन किया जाता है।

---

2. पुत्र प्राप्ति हेतु शिवाभिलाष्टक स्तोत्र- पितृलोक को मुक्ति एवं सद्गति प्रदान करने के लिये उत्तम पुत्र की अनिवार्यता है। प्रत्येक मनुष्य जन्म से ही तीन ऋण लेकर पैदा होता है। ये तीन ऋण- देवऋण, ऋषिऋण और पितरऋण हैं। अपनी शक्ति अनुसार देवमंत्र होम, व्रत एवं दान करने से देवऋण। शास्त्र, वेद, पुराणों का अध्ययन करने और ब्रह्मचर्य का पालन करने से ऋषिऋण और पिता की जीवित अवस्था में उनका अनुसरण करना, मृत्यु के अनन्तर क्षयाहतिथि में ब्राह्मणों को उत्तम भोजन कराना तथा गया आदि तीर्थों में पिण्डदान कराने से मनुष्य पितरऋण से मुक्त होता है। अतः पितृऋण से मुक्त होने के लिये गृहस्थाश्रम में संतान रत्न होना आवश्यक है। इसके

अतिरिक्त समाजिक दृष्टि से भी संतानसुख अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

संतानसुख हेतु 'शिवाभिलाषाष्टक स्तोत्र' एक उत्तम साधना है। जिसके भक्तिपाठ से मनुष्य को सौभाग्यशाली सन्तान की प्राप्ति होती है। ऋषि विश्वानर ने स्वयं 12 महीने तक फलाहार, जलाहार एवं वाय्वाहार के आधार पर प्रस्तुत शिव स्तोत्र के द्वारा पुत्ररत्न की प्राप्ति की थी। इस प्रकार के कठोर व्रत का पालन करना तो इसकाल में असम्भव ही है। फिर भी साधनाकाल में अल्प एवं सात्विक भोजन करना ही पर्याप्त है। संतान इच्छुक मनुष्य को विधिवत् यम नियमों का पालन करते हुए आठ श्लोकों वाले स्तोत्र के नित्य 108 पाठ एक वर्ष तक करने चाहिये। माता-पिता दोनों संयुक्त साधना करें तो शीघ्र कार्य सिद्ध होता है। भगवान् शिव की बालक रूप में प्रतिमा या चित्र को स्थापित कर उनका पुत्र की भांति ध्यान रखें। जैसे- नित्य तीनों संध्या स्नान कराना, झूला झूलाना, वस्त्र अर्पित करना एवं उनके अनुरूप भोजन अर्पित करनादि। ईश्वर पूजा में जब तक सच्ची भावना एवं भक्ति का मिश्रण नहीं होता तब तक ईश्वर का साक्षात्कार नहीं होता।

स्तोत्र :– एकं ब्रह्मैवाद्वितीयं समस्तं सत्यं सत्यं नेह नानास्ति किंचित्। एको रुद्रो न द्वितीयोऽवतस्थे तस्मादेकं त्वां प्रपद्ये महेशम्।।1।।

एकः कर्ता त्वं हि विश्वस्य शम्भो नाना रूपेष्वेकरूपोऽस्यरूपः। यद्वत्प्रत्यस्वर्क एकोऽप्यनेकस्तस्मान्नान्यं त्वां विनेशं प्रपद्ये।।2।।

रज्जौ सर्पः शुक्तिकायां च रूप्यं नैरः पूरस्तन्मृगाख्ये मरीचौ। यद्वत्तद्वद् विश्वगेष प्रपंचो यस्मिन् ज्ञाते तं प्रपद्ये महेशम्।।3।।

तोये शैत्यं दाहकत्वं च वह्नौ तापो भानौ शीतभानौ प्रसादः। पुष्पे गन्धो दुग्धमध्ये च सर्पिर्यत्तच्छम्भो त्वं ततस्त्वां प्रपद्ये।।4।।

शब्दं गृह्णास्यश्रवास्त्वं हि जिघ्रेरघ्राणस्त्वं व्यंघ्रिरायासि दूरात्। व्यक्षः पश्येस्त्वं रसज्ञोऽप्यजिह्वः कस्त्वां सम्यग् वेत्त्यतस्त्वां प्रपद्ये।।5।।

नो वेदस्त्वामीश साक्षादि वेद नो वा विष्णुर्नो विधाताखिलस्य। नो योगीन्द्रा नेन्द्रमुख्याश्च देवा भक्तो वेद त्वामतस्त्वां प्रपद्ये।।6।।

नो ते गोत्रं नेश जन्मापि नाख्या नो वा रूपं नैव शीलं न देशः। इत्थंभूतोऽपीश्वरस्तवं त्रिलोक्याः सर्वान् कामान् पूरयेस्तद् भजे त्वाम्।।7।।

त्वत्तः सर्वं त्वं हि सर्वं स्मरारे त्वं गौरीशस्त्वं च नग्नोऽतिशान्तः। त्वं वै वृद्धस्त्वं युवा त्वं च बालस्तत्किं यत्त्वं नास्यतस्त्वां नतोऽस्मि।।8।।

---

3. शुभ संतान प्रदाता भगवती षष्ठी देवी साधना– संतान प्राप्ति हेतु यह साधना शुभ व शीघ्रफलदायी है। मूल प्रकृति के छठें अंश से प्रकट होने के कारण इन्हें 'षष्ठी' देवी कहा जाता है। ये बालकों की अधिष्ठात्री देवी हैं, इन्हें 'बालदा' और 'विष्णुमाया' भी कहा जाता है। संतान के इच्छुक पति–पत्नी दोनों मिलकर इनकी उपासना करें तो शीघ्रफल प्राप्त होता है। जब तक कार्य सिद्ध न हो तब तक सवा लाख जप का अनुष्ठान करते रहें। अगर शक्ति हो तो प्रत्येक बार अनुष्ठान के अंत में होमादि कर्म का भी आयोजन करें या करवायें। पूर्ण विधि से दैवीयकर्म सम्पन्न किया जाये, तो कार्य शीघ्र सिद्ध होता है। गर्भ का न ठहरना, गर्भपात दोष, प्रसवपीड़ा या संतान का जन्म के बाद समाप्त हो जाना, इन सभी दोषों के निवारण के लिये विधिवत् षष्ठी देवी की उपासना करनी चाहिये। इनकी सेवा से पुत्र की इच्छा रखने वालों को पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है और इसके अतिरिक्त जन्म के उपरान्त् बालक के ऊपर

किसी व्याधि या संकट की छाया हो या बालक में कोई शारीरिक या मानसिक रोग हो तो इनकी उपासना से सब दोष समाप्त हो जाते हैं। निरन्तर इनकी भक्ति करने से घर में धन-धान्य का आगमन होता है और समाज में प्रतिष्ठा की अभिवृद्धि होती है।

सुश्रुत संहिता में छोटे शिशुओं में जो रोग उत्पन्न होते हैं, उन्हें ग्रहों से उत्पन्न बताया गया है। स्कन्दग्रह, स्कन्दापस्मार, शकुनी, रेवती, पूतना, अन्धपूतना, शीतपूतना, मुखमण्डिका और नैगमेय (पितृग्रह)- ये नौ ग्रह शिशुओं से सम्बन्धित बताये गये हैं। इन ग्रहों से पीड़ीत बालक के लक्षण अलग-अलग होते हैं। लक्षणों के आधार पर यह ज्ञान हो जाता है कि बालक किस ग्रह से पीड़ीत है। जैसे- नैगमेय ग्रह से पीड़ीत बालक के मुख से झाग गिरता है, वह हर समय बैचेन रहता है तथा ऊपर की ओर देखता हुआ बराबर रोता है, ज्वर से पीड़ीत रहता है, उसके शरीर से वसा के समान गंध आती है, वह बार-बार बेहोश हो जाता है इत्यादि। नवजात शिशु की शारीरिक तथा मानसिक शक्ति शून्य के बराबर होती है। इसलिये उनकी समस्त प्रकार से रक्षा हेतु माताओं को भगवती षष्ठी देवी के साथ उनके स्वामी कार्तिकेय की उपासना करनी चाहिये। अगर

माता-पिता दोनों अपने पुत्र के निमित्त संकल्प लेकर इनकी उपासना करते रहें, तो उस बालक का पूर्ण जीवन संकटों से मुक्त होकर सौभाग्यशाली रहता है। बालक के तेज, बुद्धि और विद्या में भी अद्भुत लाभ होता है। शालग्राम शिला, वटवृक्ष के मूल में अथवा भगवती दुर्गा के समक्ष इस साधना को सम्पन्न किया जा सकता है। मंत्रोपासना के साथ प्रत्येक माह की षष्ठी तिथि में इनके व्रत एवं दानकर्म भी करना चाहिये।

ध्यानम्- श्वेत चम्पक वर्णाभां, रत्नभूषण भूषिताम्। पवित्ररूपां परमा, देव सेनां परां भजे।।

षष्ठीदेवीमंत्र- 'ॐ ह्रीं षष्ठी दैव्यै स्वाहा।'

षष्ठीदेवी स्तोत्रम्- श्रीनारायण उवाच- स्तोत्रं श्रृणु मुनि श्रेष्ठ सर्वकाम शुभावहं।

वांछा प्रदंच सर्वेषां गूढं वेदेषु नारद। नमो देव्यै महादेव्यै सिद्धयै शान्त्यै नमो नमः।।

शुभायै देवसेनायै षष्ठ्यै देव्यै नमो नमः। वरदायै पुत्रदायै धनदायै नमो नमः।।

सुखदायै मोक्षदायै षष्ठ्यै देव्यै नमो नमः। षष्ठयै (सष्टयै) षष्ठांश रूपायै सिद्धायै च नमो नमः।।

मायायै सिद्ध योगिन्यै षष्ठी देव्यै नमो नमः। सारायै शारदायै च परा देव्यै नमो नमः।।

बालाधिष्ठातृ देव्यै च षष्ठी देव्यै नमो नमः। कल्याणदायै कल्याण्यै फलदायै च कर्मणाम्।।

प्रत्यक्षायै स्वभक्तानां षष्ठ्यै देव्यै नमो नमः। पूज्यायै स्कंद कान्तायै सर्वेषां सर्वकर्मसु।।

देव रक्षण कारिण्यै षष्ठी देव्यै नमो नमः। सिद्ध (शुद्ध) सत्व स्वरूपायै वंदितायै नृणांसदा।।

हिंसाक्रोध वर्जितायै षष्ठी देव्यै नमो नमः। धनं देहि प्रियां देहि पुत्रं देहि सुरेश्वरी।।

मानं देहि जयं देहि द्विषो जहि महेश्वरी। धर्मं देहि यशो देहि षष्ठि देव्यै नमो नमः।।

देहि भूमिं प्रजां देहि विद्यां देहि सुपूजिते। कल्याणं च जयं देहि षष्ठि देव्यै नमो नमः।।

इति देवीं च संस्तूय लेभे पुत्रं प्रियव्रत। यशस्विनं च राजेन्द्र षष्ठि देव्या प्रसादतः।।

षष्ठि स्तोत्रं मिदं ब्रह्मन्यः श्रणोति तु वत्सरम्। अपुत्रो लभते पुत्रं वरं सुचिरजीविनम्।।

वर्षमेकं च यो भक्त्या संपूज्येदं श्रृणोति च। सर्व पापाद्विनिर्मुक्तौ महावन्ध्या प्रसूयते।।

वीरं पुत्रं च गुणिनं विद्यावंतं यशस्विनं। सुचिरायुष्य वंतं च सूते देवी प्रसादतः।।

काकवन्ध्या च या नारी मृतवत्सा च या भवेत्। वर्षं श्रुत्वा लभेत्पुत्रं षष्ठि देवी प्रसादतः।।

रोग युक्ते च बाले च पिता माता श्रृणोति चेत्। मासे विमुच्यते बालः षष्ठि देवी प्रसादतः।।

देवी के अद्भुत नाम- स्वाहा, स्वधा, महाविद्या, मेधा, लक्ष्मी, सरस्वती, सती, दाक्षायणी, विद्या, इच्छा, शक्ति, क्रियात्मिका, अर्पणा, एकपर्णा, एकपाटला, उमा, हैमवती, कल्याणी, एकमातृका, ख्याति, प्रज्ञा, महाभागा, गौरी, गणाम्बिका, महादेवी, नन्दिनी, जातवेदसी, सावित्री, वरदा, पुण्या, पावनी, लोकविश्रुता, आज्ञा, आवेशनी, कृष्णा, तामसी, सात्त्विकी, शिवा, प्रकृति, विकृता, रौद्री, दुर्गा, भद्रा, प्रमाथिनी, कालरात्रि, महामाया, रेवती, भूतनायिका, गौतमी, कौशिकी, आर्या, चण्डी, कात्यायनी, सती,

कुमारी, यादवी, देवी, वरदा, कृष्णपिंगला, बर्हिध्वजा, शूलधरा, परमा, ब्रह्मचारिणी, महेन्द्रोपेन्द्रभगिनी, दृषद्वती, एकशूलधृक्, अपराजिता, बहुभुजा, प्रगल्भा, सिंहवाहिनी, शुम्भादिदैत्यहन्त्री, महामहिषमर्दिनी, अमोघा, विन्ध्यनिलया, विक्रान्ता, गणनायिका।

जो मनुष्य भक्तिपूर्वक आदिशक्ति के इन नामों का पठन करते हैं, शनैः शनैः उनके पापकर्म स्वाहा हो जाते हैं। जंगल में, पर्वत पर, नगर में, घर में, जल अथवा स्थल कहीं भी रक्षा हेतु इनका स्मरण करना चाहिये। बुरे ग्रहों, भूतों, पूतना तथा मातृगणों से पीड़ीत शिशुओं की रक्षा के लिये इन नामों का चिन्तन अभय प्रदान करता है। षष्ठी देवी के जप एवं स्तोत्र के साथ नित्य इन नामों का पाठ करने से त्वरित फल मिलता है।

---

4. संतानप्रदाता श्रीसंतानगोपालमंत्र– विनियोग– ॐ अस्य श्रीसन्तानगोपालमंत्रस्य श्रीनारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकृष्णो देवता, ग्लौं बीजम्, नमः शक्तिः, पुत्रार्थे जपे विनियोगः।

अंगन्यास के द्वारा देवता को अपने अंगों में मानसिक रूप से भावित करें, जिन साधकों को अंगन्यास की विधि नहीं पता, वे केवल उच्चारण ही कर दिया करें–

देवकीसुत गोविन्द – अंगुष्ठाभ्यां नमः – हृदयाय नमः।

वासुदेव जगत्पते – तर्जनीभ्यां नमः – शिरसे स्वाहा।

देहि मे – मध्यमाभ्यां नमः – शिखायै वषट्।

तनयं कृष्ण त्वामहं – अनामिकाभ्यां नमः – कवचाय हुम्।

शरणं गतः – कनिष्ठिकाभ्यां नमः – अस्त्राय फट्।

ध्यानम्– वैकुण्ठादागतं कृष्णं रथस्थं करुणानिधिम्। किरीटिसारथिं पुत्रमानयन्तं परात्परम्।। आदाय तं जलस्थं च गुरुवे वैदिकाय च। अर्पयन्तं महाभागं ध्यायेत् पुत्रार्थमच्युतम्।।

मंत्र– 'ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।'

संक्षिप्त विधि– शुभ तिथि या काल में श्रीगोपालकृष्ण को सविधि अपने गृहमन्दिर में स्थापित करें। नित्य मक्खन–मिश्री या उत्तम वस्तुओं से गोपाल को भोग लगायें एवं अपने पुत्र के समान पालने में झूला झूलायें। पूर्णिमा, अमावस्या, एकादशी, नवरात्र काल या अन्य शुभ काल में जपारम्भ कर सकते हैं। सर्वप्रथम अपने गुरु की वन्दना कर, गणेश, विष्णु, शिवजी का यथासम्भव पूजन कर विधि एवं संकल्पपूर्वक सन्तान गोपाल मंत्र के एक या तीन लाख जप पूर्ण करें। तिल, शहद, खीर, गुग्गुल एवं घृतादि से दशांश होम सम्पन्न कर ब्राह्मण भोजन कराये। संतानफल को ईश्वर से प्राप्त करने में कई बार अधिक विलम्ब हो जाता है। यह सब अपना भाग्यदोष ही होता है। अतः साधक निराश न होकर उत्साहपूर्वक निरन्तर मंत्र साधना में

लीन रहे। संतान प्राप्ति के लिये शारीरिक रूप से स्त्री एवं पुरुष दोनों का स्वस्थ होना अनिवार्य है। कोई शारीरिक कष्ट या रोग होने पर गोपाल मंत्र के साथ मृत्युंजय कवच या मंत्र के पर्याप्त संख्या में जप करना लाभकारी होता है। इस विधि द्वारा भक्तिपूर्वक जप करने से संतान प्राप्ति के उत्तम योग बनते हैं।

संतानसुख हेतु विशेष धार्मिक कर्म– महाभारत में श्रीकृष्ण ने गौसेवा के बारे में कहा है– गौसेवा से मनुष्य सब कुछ प्राप्त कर सकता है। धनार्थी को धन, पुत्रार्थी को पुत्र, विद्यार्थी को विद्या एवं मोक्षार्थी को मोक्ष प्राप्त होता है तथा नारियों को सौभाग्य की प्राप्ति होती है। शास्त्रों में कई स्थानों पर गौसेवा की महिमा का वर्णन मिलता है। मंत्र साधना के साथ गौसेवा करने से प्रारब्ध का महाकष्ट शीघ्र कटता है। जिसके फलस्वरूप शीघ्र कार्य सिद्ध होता है। अतः संतान प्राप्ति में इस सेवा को भी अवश्य सम्मिलित करना चाहिये।

पुत्र के अभाव में स्त्री शुभ तिथि या काल को गोसेवा एवं पूजा आरम्भ करे। प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर अपने घर में, मन्दिर में, पड़ोस में अथवा गौशाला में स्थित गाय को पूर्वाभिमुख खड़ी करके स्वयं उत्तराभिमुख होकर शुद्धजल से

पादप्रक्षालन कर उसके ललाट को धोकर मध्य में रोली का टीका लगाये, अक्षत चढ़ाये एवं मानसिक रूप से धूपदीपक अर्पित करें। तत्पश्चात् अपनी सामर्थ्यानुसार हरा चारा या नैवेद्यादि अर्पित करें। अन्त में करबद्ध नतमस्तक होकर मानसिक प्रार्थना करें कि हे माता! आप मुझे पुत्ररत्न या अन्य सुख प्रदान करें। इसी विधि से नित्य एक वर्ष तक सेवा करने से महादुःख एवं सन्तानदोष समाप्त होते हैं। गाय का बछड़ा भी साथ में हो तो अति उत्तम है। इसके अतिरिक्त निर्धन एवं असहाय गर्भवती स्त्री की सेवा एवं सहायता करने से भी संतान योग का उदय होता है।

प्रत्येक पूर्णिमा को विष्णु सहस्रनाम या गोपालसहस्रनाम से होम करें या करवायें (निरन्तर 12 पूर्णिमा तक अर्थात् एक वर्ष तक) इस होम से संतानदोष तो समाप्त होता ही है, धनधान्य का विशेष आगमन होता है एवं पितृदोष से भी मुक्ति मिलती है।

असहाय निर्धन बच्चों की प्रेमपूर्वक सेवा करने से शीघ्र ही संतान सुख प्राप्त होता है। अतः सन्तान इच्छुक दम्पत्ति को अपनी सामर्थ्यानुसार असहाय बच्चों के लिये भोजन, दवाई एवं वस्त्रों की व्यवस्था कर पुण्य अर्जित करना चाहिये। श्रद्धापूर्वक दान करने से दानदाता अपने अमिट दुर्भाग्य को भी सौभाग्य में परिवर्तित कर सकता है।

मंत्र उपासना के साथ ऊपर लिखे धार्मिक कार्य निष्ठापूर्वक करते रहें एवं दम्पत्ति अपने नित्य कर्म भी धर्मानुसार ही सम्पन्न करने का प्रयास करें। जिससे ईश्वर से अति शीघ्र फल प्राप्त हो। मंत्र जप के साथ नित्य एक पाठ स्तोत्र का करे–

संतानगोपाल स्तोत्रम्– श्रीशं कमलपत्राक्षं देवकीनन्दनं हरिम्। सुतसम्प्राप्तये कृष्णं नमामि मधुसूदनम्।।

नमाम्यहं वासुदेवं सुतसम्प्राप्तये हरिम्। यशोदांकगतं बालं गोपालं नन्दनन्दनम्।।

अस्माकं पुत्रलाभाय गोविन्दं मुनिवन्दितम्। नमाम्यहं वासुदेवं देवकीनन्दनं सदा।।

गोपालं डिम्बकं वन्दे कमलापतिमच्युतम्। पुत्रसम्प्राप्तये कृष्णं नमामि यदुपुंगवम्।।

पुत्रकामेष्टिफलदं कंजाक्षं कमलापतिम्। देवकीनन्दनं वन्दे सुतसम्प्राप्तये मम।।

पद्मापते पद्मनेत्र पद्मनाभ जनार्दन। देहि मे तनयं श्रीश वासुदेव जगत्पते।

यशोदांकगतं बालं गोविन्दं मुनिवन्दितम्। अस्माकं पुत्रलाभाय नमामि श्रीशमच्युतम्।

श्रीपते देवदेवेश दीनार्तिहरणाच्युत। गोविन्द मे सुतं देहि नमामि त्वां जनार्दन।

भक्तकामद गोविन्द भक्तं रक्षशुभप्रद। देहि मे तनय कृष्णं रुक्मिणीवल्लभ प्रभो।।

रुक्मिणीनाथ सर्वेश देहिमे तनयं सदा। भक्तमन्दार पद्माक्ष त्वामहं शरणं गतः।।

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

वासुदेव जगद्वन्द्य श्रीपते पुरुषोत्तम। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

कंजाक्ष कमलानाथ परकारुणिकोत्तम। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

लक्ष्मीपते पद्मनाभ मुकुन्द मुनिवन्दित। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

कार्यकारणरूपाय वासुदेवाय ते सदा। नमामि पुत्रलाभार्थं सुखदाय बुधाय ते।।

राजीवनेत्र श्रीराम रावणारे हरे कवे। तुभ्यं नमामि देवेश तनयं देहि मे हरे।।

अस्माकं पुत्रलाभाय भजामि त्वां जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव रमापते।।

श्रीमानिनीमानचोर गोपीवस्त्रापहारक। देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते।।

अस्माकं पुत्रसम्प्राप्तिं कुरुष्व यदुनन्दन। रमापते वासुदेव मुकुन्द मुनिवन्दित्।।

वासुदेव सुतं देहि तनयं देहि माधव। पुत्रं मे देहि श्रीकृष्ण वत्सं देहि महाप्रभो।।

डिम्भकं देहि श्रीकृष्ण आत्मजं देहि राघव। भक्तमन्दार मे देहि तनयं नन्दनन्दन।।

नन्दनं देहि मे कृष्ण वासुदेव जगत्पते। कमलनाथ गोविन्द मुकुन्द मुनिवन्दित।।

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम। सुतं देहि श्रियं देहि पुत्रं प्रदेहि मे।।

यशोदास्तन्यपानज्ञं पिबन्तं यदुनन्दनम्। वन्देऽहं पुत्रलाभार्थं कपिलाक्षं हरिं सदा।।

नन्दनन्दन देवेश नन्दनं देहि मे प्रभो। रमापते वासुदेव श्रियं पुत्रं जगत्पते।।

पुत्रं श्रियं श्रियं पुत्रं पुत्रं मे देहि माधव। अस्माकं दीनवाक्यस्य अवधारय श्रीपते।।

गोपालडिम्भ गोविन्द वासुदेव रमापते। अस्माकं डिम्भकं देहि श्रियं देहि जगत्पते।।

मनोवांछितफलं देहि देवकीनन्दनाच्युत। मम पुत्रार्थितं धन्यं कुरुष्व यदुनन्दन।।

याचेऽहं त्वां श्रियं पुत्रं देहिमे पुत्रसम्पदम्। भक्तचिन्तामणे रामकल्पवृक्ष महाप्रभो।।

आत्मजं नन्दनं पुत्रं कुमारं डिम्भकं सुतम्। अर्भकं तनयं देहि सदा मे रघुनन्दन।।

वन्दे सन्तानगोपालं माधवं भक्तकामदम्। अस्माकं पुत्रसम्प्राप्त्यै सदा गोविन्दमच्युतं।।

ओंकारयुक्तं गोपालं श्रीयुक्तं यदुनन्दनम्। क्लींयुक्तं देवकीपुत्रं नमामि यदुनायकम्।।

वासुदेव मुकुन्देश गोविन्द माधवाच्युत। देहि मे तनयं कृष्ण रमानाथ महाप्रभो।।

राजीवनेत्र गोविन्द कपिलाक्ष हरे प्रभो। समस्तकाम्यवरद देहि मे तनयं सदा।।

अब्जपद्मनिभं पद्मवृन्दरूप जगत्पते। देहि मे वरसत्पुत्रं रमानायक माधव।।

नन्दपाल धरापाल गोविन्द यदुनन्दन। देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो।।

दासमन्दार गोविन्द मुकुन्द माधवाच्युत। गोपाल पुण्डरीकाक्ष देहिमे तनयं श्रियम्।।

यदुनायक पद्मेश नन्दगोपवधूसुत। देहि मे तनयं कृष्ण श्रीधर प्राणनायक।।

अस्माकं वाप्रिछतं देहि देहि पुत्रं रमापते। भगवन् कृष्ण सर्वेश वासुदेव जगत्पते।।

रमाहृदयसम्भार सत्यभामामनःप्रिय। देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो।।

चन्द्रसूर्याक्ष गोविन्द पुण्डरीकाक्ष माधव। अस्माकं भाग्यसत्पुत्रं देहि देव जगत्पते।।

कारुण्यरूप पद्माक्ष पद्मनाभसमर्चित। देहि मे तनयं कृष्ण देवकीनन्दनन्दन।।

देवकीसुत श्रीनाथ वासुदेव जगत्पते। समस्तकामफलद देहि मे तनयं सदा।।

भक्तमन्दार गम्भीर शंकराच्युत माधव। देहि मे तनयं गोपबालवत्सल श्रीपते।।

श्रीपते वासुदेवेश देवकीप्रियनन्दन। भक्तमन्दार मे देहि तनयं जगतां प्रभो।।

जगन्नाथ रमानाथ भूमिनाथ दयानिधे। वासुदेवेश सर्वेश देहि मे तनयं प्रभो।।

श्रीनाथ कमलपत्राक्ष वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

दासमन्दार गोविन्द भक्तचिन्तामणे प्रभो। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रमानाथ महाप्रभो। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

श्रीनाथ कमलपत्राक्ष गोविन्द मधुसूदन। मत्पुत्रफलसिद्धयर्थं भजामि त्वां जनार्दन।।

स्तन्यं पिबन्तं जननीमुखाम्बुजं विलोक्य मन्दस्मितमुज्जवलांगम्। स्पृशन्तमन्यस्तनमंगुलीभिर्वन्दे यशोदांकगतं मुकुन्दम्।।

याचेऽहं पुत्रसन्तानं भवन्तं पद्मलोचन। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

अस्माकं पुत्रसम्पत्तेश्चिन्तयामि जगत्पते। शीघ्रं मे देहि दातव्यं भवता मुनिवंदित।।

वासुदेव जगन्नाथ श्रीपते पुरुषोत्तम। कुरु मां पुत्रदत्तं च कृष्ण देवेन्द्रपूजित।।

कुरु मां पुत्रदत्तं च यशोदाप्रियनन्दन। मह्यं च पुत्रसंतानं दातव्यं भवता हरे।।

वासुदेव जगन्नाथ गोविन्द देवकीसुत। देहि मे तनयं राम कौसल्याप्रियनन्दन।।

पद्मपत्राक्ष गोविन्द विष्णो वामन माधव। देहि मे तनयं सीताप्राणनायक राघव।।

कंजाक्ष कृष्ण देवेन्द्रमण्डित मुनिवन्दित। लक्ष्मणाग्रज श्रीराम देहि मे तनयं सदा।।

देहि मे तनयं राम दशरथप्रियनन्दन। सीतानायक कंजाक्ष मुचुकुन्दवरप्रद।।

विभीषणस्य या लंका प्रदत्ता भवतापुरा। अस्माकं तत्प्रकारेण तनयं देहि माधव।।

भवदीयपदाम्भोजे चिन्तयामि निरन्तरम्। देहि मे तनयं सीताप्राणवल्लभ राघव।।

राम मत्काम्यवरद पुत्रोत्पत्तिफलप्रद। देहि मे तनयं श्रीश कमलासनवन्दित।।

राम राघव सीतेश लक्ष्मणानुज देहि मे। भाग्यवत्पुत्रसंतानं दशरथात्मज श्रीपते।।

देवकीगर्भसंजात यशोदाप्रियनन्दन। देहि मे तनयं राम कृष्ण गोपाल माधव।।

कृष्ण माधव गोविन्द वामनाच्युत शंकर। देहि मे तनयं श्रीश गोपबालनायक।।

गोपबाल महाधन्य गोविन्दाच्युत माधव। देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते।।

दिशतु दिशतु पुत्रं देवकीनन्दनोऽयं। दिशतु दिशतु शीघ्रं भाग्यवत्पुत्रलाभम्।।

दिशतु दिशतु श्रीशो राघवो रामचन्द्रो। दिशतु दिशतु पुत्रं वंशविस्तारहेतोः।।

दीयतां वासुदेवेन तनयो मत्प्रियः सुतः। कुमारो नन्दनः सीतानायकेन सदा मम।।

राम राघव गोविन्द देवकीसुत माधव। देहि मे तनयं श्रीशगोपबालनायक।।

वंशविस्तारकं पुत्रं देहि मे मधुसूदन। सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः।।

ममाभीष्टसुतं देहि कंसारे माधवाच्युत। सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः।।

चन्द्रार्ककल्पपर्यन्तं तनयं देहि माधव। सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः।।

विद्यावन्तं बुद्धिमन्तं श्रीमन्तं तनयं सदा। देहि मे तनयं कृष्ण देवकीनन्दन प्रभो।।

नमामि त्वां पद्मनेत्र सुतलाभाय कामदम्। मुकुन्दं पुण्डरीकाक्षं गोविन्दं मधुसूदनम्।।

भगवन् कृष्ण गोविन्द सर्वकामफलप्रद। देहि मे तनयं स्वामिंस्त्वामहं शरणं गतः।।

स्वामिंस्तवं भगवन् रामकृष्णमाधव कामद। देहि मे तनयं नित्यं त्वामहं शरणं गतः।।

तनयं देहि गोविन्द कंजाक्ष कमलापते। सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः।।

पद्मापते पद्मनेत्र प्रद्युम्नजनक प्रभो। सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः।।

शंखचक्रगदाखड्गशांर्गपाणे रमापते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

नारायण रमानाथ राजीवपत्रलोचन। सुतं मे देहि देवेश पद्मपद्मानुवन्दित।।

रामराघव गोविन्द देवकीवरनन्दन। रुक्मिणीनाथ सर्वेश नारदादिसुरार्चित।।

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं श्रीश गोपबालनायक।।

मुनिवन्दित गोविन्द रुक्मिणीवल्लभ प्रभो। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

गोपिकार्जितपंकेजमरन्दासक्तमानस। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

रमाहृदयपंकेजलोल माधव कामद। ममाभीष्टसुतं देहि त्वामहं शरणं गतः।।

वासुदेव रमानाथ दासानां मंगलप्रद। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

कल्याणप्रद गोविन्द मुरारे मुनिवन्दित। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

पुत्रप्रद मुकुन्देश रुक्मिणीवल्लभ प्रभो। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

पुण्डरीकाक्ष गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

दयानिधे वासुदेव मुकुन्द मुनिवन्दित। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

पुत्रसम्पत्प्रदातारं गोविन्दं देवपूजितम्। वन्दामहे सदा कृष्ण पुत्रलाभप्रदायिनम्।।

कारुण्यनिधये गोपीवल्लभाय मुरारये। नमस्ते पुत्रलाभार्थं देहि मे तनयं विभो।।

नमस्तस्मै रमेशाय रुकिमणीवल्लभाय ते। देहि मे तनयं श्रीश गोपबालनायक।।

नमस्ते वासुदेवाय नित्यश्रीकामुकाय च। पुत्रदाय च सर्पेन्द्रशायिने रंगशायिने।।

रंगशायिन् रमानाथ मंगलप्रद माधव। देहि मे तनयं श्रीश गोपबालनायक।।

दासस्य मे सुतं देहि दीनमन्दार राघव। सुतं देहि सुतं देहि पुत्रं देहि रमापते।।

यशोदातनयाभीष्टपुत्रदानरतः सदा। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

मदिष्टदेव गोविन्द वासुदेव जर्नादन। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

नीतिमान् धनवान् पुत्रो विद्यावांश्च प्रजायते। भगवंस्त्वकृपायाश्च वासुदेवेन्द्रपूजित।।

यः पठेत् पुत्रशतकं सोऽपि सत्पुत्रवान् भवेत। श्रीवासुदेवकथितं स्तोत्ररत्नं सुखाय च।।

जपकाले पठेन्नित्यं पुत्रलाभं धनं श्रियम्। ऐश्वर्यं राजसम्मान सद्यो याति न संशयः।।

गोपालशतनामावलि- विनियोग- ॐ अस्य श्रीगोपालशतनाम स्तोत्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीगोपालः परमात्मा देवता, श्रीगोपालप्रीत्यर्थे शतनामपाठे विनियोगः।

ध्यानम्- कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं, नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम्। सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली, गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः।।

शतनामावलि- ॐ गोपालाय नमः। ॐ गोपतये नमः। ॐ गोप्त्रे नमः। ॐ गोविन्दाय नमः। ॐ गोकुलप्रियाय नमः। ॐ गम्भीराय नमः। ॐ गगनाय नमः। ॐ गोपीप्राणभृते

नमः। ॐ प्राणधारकाय नमः। ॐ पतितानन्दनाय नमः।10। ॐ नन्दिने नमः। ॐ नन्दीशाय नमः। ॐ कंससूदनाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ नरत्रात्रे नमः। ॐ नरकार्णवतारकाय नमः। ॐ नवनीतप्रियाय नमः। ॐ नेत्रे नमः। ॐ नवीनघनसुन्दराय नमः। ॐ नवबालकवात्सल्याय नमः।20। ॐ ललितानन्दतत्पराय नमः। ॐ पुरुषार्थप्रदाय नमः। ॐ प्रेमप्रवीणाय नमः। ॐ परमाकृतये नमः। ॐ करुणाय नमः। ॐ करुणानाथाय नमः। ॐ कैवल्यसुखदायकाय नमः। ॐ कदम्बकुसुमावेशिने नमः। ॐ कदम्बवनमन्दिराय नमः। ॐ कादम्बीविमदामोद घूर्णलोचनपंकजाय नमः।30। ॐ कामिने नमः। ॐ कान्तकलायै नमः। ॐ आनन्दिने नमः। ॐ कान्ताय नमः। ॐ कामनिधये नमः। ॐ कवये नमः। ॐ कौमोदकीगदापाणये नमः। ॐ कवीन्द्राय नमः। ॐ गतिमते नमः। ॐ हराय नमः।40। ॐ कमलेशाय नमः। ॐ कलानाथाय नमः। ॐ कैवल्याय नमः। ॐ सुखसागराय नमः। ॐ केशवाय नमः। ॐ केशिघ्ने नमः। ॐ केशाय नमः। ॐ कलिकल्मषनाशनाय नमः। ॐ कृपालवे नमः। ॐ करुणासेविने नमः।50। ॐ कृपोन्मीलितलोचनाय नमः। ॐ स्वच्छन्दाय नमः। ॐ सुन्दराय नमः। ॐ सुन्दाय नमः। ॐ सुरवृन्दनिषेविताय नमः। ॐ सर्वज्ञाय नमः। ॐ सर्वदाय नमः। ॐ दात्रे नमः।

ॐ सर्वपापविनाशनाय नमः। ॐ सर्वाह्लादकराय नमः।60। ॐ सर्वाय नमः। ॐ सर्ववेदविदां प्रभवे नमः। ॐ वेदान्तवेद्याय नमः। ॐ वेदात्मने नमः। ॐ वेदप्राणकराय नमः। ॐ विभवे नमः। ॐ विश्वात्मने नमः। ॐ विश्वविदे नमः। ॐ विश्वप्राणदाय नमः। ॐ विश्ववन्दिताय नमः।70। ॐ विश्वेशाय नमः। ॐ शमनाय नमः। ॐ त्रात्रे नमः। ॐ विश्वेश्वराय नमः। ॐ सुखप्रदाय नमः। ॐ विश्वदाय नमः। ॐ विश्वहारिणे नमः। ॐ पूरकाय नमः। ॐ करुणानिधये नमः। ॐ धनेशाय नमः।80। ॐ धनदाय नमः। ॐ धन्विने नमः। ॐ धीराय नमः। ॐ धीरजनप्रियाय नमः। ॐ धरासुखप्रदाय नमः। ॐ धात्रे नमः। ॐ दुर्धरान्तकराय नमः। ॐ धराय नमः। ॐ रमानाथाय नमः। ॐ रमानन्दाय नमः।90। ॐ रसज्ञाय नमः। ॐ हृदयास्पदाय नमः। ॐ रसिकाय नमः। ॐ रसिदाय नमः। ॐ रासिने नमः। ॐ रासानन्दकराय नमः। ॐ रसाय नमः। ॐ राधिकाराधिताय नमः। ॐ राधाप्राणेशाय नमः। ॐ प्रेमसागराय नमः।100।

---

5. संतान एवं सर्वसुखप्रदाता श्रीजयदुर्गामंत्र- विनियोगः-

ॐ अस्य श्रीजयदुर्गा महामंत्रस्य, मार्कण्डयो मुनिः, बृहती छन्दः,

श्रीजयदुर्गा देवता, प्रणवो बीजं, स्वाहा शक्तिः, श्रीदुर्गा प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

हृदयादिन्यास- ॐ दुर्गे हृदयाय नमः। ॐ दुर्गे शिरसि स्वाहा। ॐ दुर्गायै शिखायै वषट्। ॐ भूतरक्षिणी कवचाय हुं। ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षिणि नेत्रत्रयाय वौषट। ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षिणि अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां, शंखं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्। सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं, ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः।

मंत्र- 'ॐ नमो दुर्गे दुर्गे रक्षिणी स्वाहा।'

संक्षिप्त प्रयोग- इस मंत्र के पांच लाख जप करें, शुद्ध घृत के साथ उत्तम सामग्रियों से होम करें। इस मंत्र का जप करके युद्ध में प्रवेश करने वाला साधक समस्त शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। भगवती दुर्गा का यह चमत्कारिक मंत्र समस्त प्रकार के उपद्रवों को शान्त करने वाला तथा समस्त प्रकार के सुखों का कारक है। इस मंत्र के जप के साथ प्रत्येक शुक्रवार या अष्टमी तिथि को निर्धन कन्याओं की सेवा करने से शीघ्र फल प्राप्त होता है।

ब्रह्मकृतं जयदुर्गा स्तोत्रम्- ब्रह्मोवाच- दुर्गे शिवेऽभये माये नारायणि सनातनि। जये मे मंगलं देहि नमस्ते सर्वमंगले।।

दैत्यनाशार्थवचनो दकारः परिकीर्तितः। उकारो विघ्ननाशार्थवाचको वेदसम्मतः।।

रेफो रोगघ्नवचनो गश्च पापघ्नवाचकः। भयशत्रुघ्नवचनश्चाकारः परिकीर्तितः।।

स्मृत्युक्ति स्मरणाद् यस्या एते नश्यन्ति निश्चितम्। अतो दुर्गा हरेः शक्तिर्हरिणा परिकीर्तिता।।

विपत्तिवाचको दुर्गश्चाकारो नाशवाचकः। दुर्गं नश्यति या नित्यं सा दुर्गा परिकीर्तिता।।

दुर्गो दैत्येन्द्रवचनोऽप्याकारो नाशवाचकः। तं ननाश पुरा तेन बुधैर्दुर्गा प्रकीर्तिता।।

शश्च कल्याणवचन इकारोत्कृष्टवाचकः। समूहवाचकश्चैव वाकारो दातृवाचकः।।

श्रेयःसंघोत्कृष्टदात्री शिवा तेन प्रकीर्तिता। शिवराशिर्मूर्तिमती शिवा तेन प्रकीर्तिता।।

शिवो हि मोक्षवचनश्चाकारो दातृवाचकः। स्वयं निर्वाणदात्री या सा शिवा परिकीर्तिता।।

अभयो भयनाशोक्तश्चाकारो दातृवाचकः। प्रददात्यभयं सद्यः साभया परिकीर्तिता।।

राजश्रीवचनो माश्च याश्च प्रापणवाचकः। तां प्रापयति या सद्यः सा माया परिकीर्तिता।।

माश्च मोक्षार्थवचनो याश्च प्रापणवाचकः। तं प्रापयति या नित्यं सा माया परिकीर्तिता।।

नारायणार्धांगभूता तेन तुल्या च तेजसा। तदा तस्य शरीरस्था तेन नारायणी स्मृता।।

निर्गुणस्य च नित्यस्य वाचकश्च सनातनः। सदा नित्या निर्गुणा या कीर्तिता सा सनातनी।।

जयः कल्याणवचनो ह्याकारो दातृवाचकः। जयं ददाति या नित्यं सा जया परिकीर्तिता।।

सर्वमंगलशब्दश्च सम्पूर्णैश्वर्यवाचकः। आकारो दातृवचनस्तद्दात्री सर्वमंगला।।

नामाष्टकमिदं सारं नामार्थसहसंयुतम्। नारायणेन यद् दत्तं ब्रह्मणे नाभिपंकजे।।

तस्मै दत्त्वा निद्रितश्च बभूव जगतां पतिः। मधुकैटभो दुर्गान्तो ब्रह्माणं हन्तुमुद्यतौ।। स्तोत्रोणानेन स ब्रह्मा स्तुतिं नत्वा चकार ह।

और अंत में इन शब्दों के साथ विदा लेते हुए– देवोपासना में वास्तविक गुरु की प्रसन्नता और उनकी नाराजगी दोनों ही का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है। जिसने दीक्षा के समय और दीक्षा के बाद भी सेवाभाव से अपने गुरु को प्रसन्न एवं संतुष्ट नहीं किया वह साधना का पूर्णलाभ प्राप्त नहीं कर सकता है। यह अटल सत्य है।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

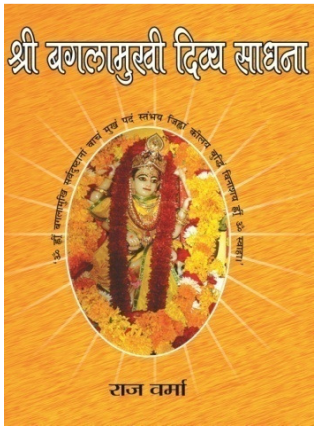
श्री बगलामुखी दिव्य साधना
राज वर्मा